## विचार बिन्दु

कोयल दिव्य आम रस पीकर भी अभिमान नहीं करती, लेकिन मेंढक कीचड़ का पानी पीकर भी टर्राने लगता है। –प्रसंग रत्नावली

# कितना दमदार है भारतीय पासपोर्ट?

हम में से बहुत सारे लोगों का ध्यान शायद इस बात की तरफ नहीं जाता है कि अलग–अलग देशों के पासपोर्ट अलग–अलग महत्व रखते हैं। इसे महत्व कहें, वज़न कहें, ताकत कहें – चाहे जो कहें! सामान्यत: तो हम इतना ही जानते हैं कि विदेश यात्रा के लिए दो दस्तावेज़ ज़रूरी होते है पासपोर्ट और वीज़ा। मान लीजिए आप भारतीय नागरिक हैं और चीन जाना चाहते हैं तो आपको भारतीय पासपोर्ट और चीनी वीज़ा की ज़रूरत होगी। अगर बात इतनी ही है तो फिर हम यदा–कदा जो ख़बरें पढ़ते हैं कि हमारा पासपोर्ट मज़बूत हुआ (या कमज़ोर हुआ) उसका क्या आशय होता है? हाल में एक ख़बर आई थी कि लंदन की ग्लोबल सिटीज़न और रेज़िडेंस एडवाइज़री फ़र्म हेनली एंड पार्टनर्स के 2025 के तिमाही अपडेट के अनुसार वैश्विक पासपोर्ट रैंकिंग में भारत आठ पायदान की छलांग लगाकर 77वें स्थान पर पहुंच गया है। बताता चलूं कि पिछले साल की इसी अवधि में भारत 85वें स्थान पर था। वैसे भारतीय पासपोर्ट की हैसियत में बहुत ज़्यादा उतार–चढ़ाव आते रहे हैं। सन् 2006 में हमारा पासपोर्ट 71वें स्थान पर था जो 2021 में फिसल कर 90वें स्थान पर चला गया था। वैसे इसकी एक वजह कोविड जन्य प्रतिबंध भी थे। इस साल 77वें स्थान का स्पष्टीकरण यह है कि अब भारतीय पासपोर्ट धारक 57 की बजाय 59 देशों में वीज़ा के बग़ैर या वीज़ा ऑनअराइवल की सुविधा के तहत जा सकता है। इस सुविधा में दो नए देश फिलीपींस और श्रीलंका जुड़े हैं। जिस हेनली पासपोर्ट इण्डेक्स में अब भारत 77वें स्थान पर आया है उसमें सिंगापुर पहले स्थान पर है। सिंगापुर पासपोर्ट धारक दुनिया के 193 देशों में वीज़ा मुक्त यात्रा का सुख ले सकता है। इस वीज़ा मुक्ति में वीज़ा ऑनअराइवल और ईटीए (इलेक्ट्रॉनिक ट्रैवल ऑथरिटी) भी शामिल है। सिंगापुर के बाद जापान और दक्षिणी कोरिया के पासपोर्ट दूसरे स्थान पर हैं क्योंकि उनके धारक 190 देशों की सुगम यात्रा कर सकते हैं। इनके ठीक पीछे डेनमार्क, फिनलैण्ड, फ्रांस, जर्मनी, आयरलैण्ड, इटली और स्पेन समेत सात यूरोपीय देश हैं जहां के पासपोर्ट धारक 189 देशों की वीज़ा फ्री यात्रा कर सकते हैं। इस इंडेक्स में सबसे नीचे है अफ़गानिस्तान, जिसके पासपोर्ट धारक को केवल 25 देशों में वीज़ा फ्री प्रवेश मिलता है। अभी हमने बताया था कि भारतीय पासपोर्ट धारक के लिए हाल में दो नए देश वीज़ा फ्री हुए हैं। इस बार सबसे अधिक बढ़त हासिल की है सऊदी अरब ने। उसके पासपोर्ट धारकों के लिए जनवरी के बाद चार नए वीज़ा फ्री गंतव्य जुड़े हैं और अब सऊदी अरब पासपोर्ट धारक 91 देशों की वीज़ा फ्री यात्रा कर सकता है। लेकिन जहां तक रैंकिंग की बात है सन् 2015 के बाद से अब तक की सबसे लम्बी छलांग चीन ने लगाई है। वह 94वें स्थान से बढ़कर 60वें स्थान पर जा पहुंचा है। और इसी क्रम में यह भी जान लें कि जो अमरीका 2014 में और ब्रिटेन 2015 में इस इंडेक्स में शीर्ष पर थे, उनकी रैंकिंग में काफी गिरावट आई है। अमरीकी पासपोर्ट अब केवल 182 देशों की और ब्रिटेन का पासपोर्ट 186 देशों की वीज़ा फ्री यात्रा करवाने में सक्षम रह गए हैं।

हमने इस आलेख के प्रारंभ में पासपोर्ट की ताकत की बात कही थी। उसे थोड़ा और स्पष्ट कर दें। हेनली एंड पार्टनर्स के सीईओ डॉ जुएर्गस्टेफ़ेन के अनुसार, "आज के दौर में पासपोर्ट सिर्फ यात्रा दस्तावेज़ नहीं है। यह किसी देश के कूटनीतिक असर, ग्लोबल इंटीग्रेशन और विदेशी नीति की प्राथमिकताओं को दर्शाता है। ....बढ़ती असमानता और राजनीतिक अनिश्चितता के इस युग में स्ट्रैटेजिक ट्रैवल फ्रीडम और नागरिकता की योजना पहले से कहीं ज़्यादा अहम हो गई है।" ज़ाहिर है कि पासपोर्ट की यह रैंकिंग न केवल सम्बद्ध देश के नागरिकों की विदेश यात्राओं की सुगमता की परिचायक है, इससे यह भी पता चलता है कि दुनिया में उस देश की हैसियत कैसी है। जब आप विदेश जाना चाहते हैं तो आपको यह देखना पड़ता है कि जहां आप जाना चाहते हैं वहां के लिए वीज़ा की क्या ज़रूरतें हैं। अगर आपको वहां का वीज़ा लेना है तो पर्याप्त समय पहले, खूब लम्बी–चौड़ी कागज़ी कार्यवाही करके और भारी शुल्क देकर वीज़ा के लिए आवेदन करना होता है और उसके बाद शुरु होता है प्रतीक्षा का लम्बा समय, जो एक–दो दिन से लगाकर एक–दो माह तक हो सकता है। और यह ज़रूरी नहीं कि आपने आवेदन किया तो आपको वीज़ा मिल ही जाएगा। तो आवेदन करने के बाद अनिश्चितता का तनाव भी झेलना पड़ता है। अभी भारतीय पासपोर्ट धारक को दुनिया के 173 गंतव्यों के लिए वीज़ा हासिल करने के यह कष्टप्रद प्रक्रिया पूरी करनी होती है। जिन देशों के लिए वीज़ा ज़रूरी नहीं है वहां की यात्रा लगभग उतनी ही सुगम होती है जितनी अपने देश में एक से दूसरे शहर की यात्रा होती है। सामान उठाएं, टिकिट लें और चल पड़ें। कोई झंझट ही नहीं। वीज़ा ऑनअराइवल भी कोई ज़्यादा परेशान करनी वाली प्रक्रिया नहीं है। संबद्ध देश के प्रवेश द्वार पर पहुंच कर एक फॉर्म भरें, फीस जमा कराएं और उस देश में प्रवेश कर लें।

**किसी देश के पासपोर्ट की ताकत कई बातों से निर्धारित होती है। इनमें सबसे ख़ास है उस देश के अन्य देशों के साथ द्विपक्षीय संबंध। आप किसी देश के नागरिक को अपने देश में बग़ैर वीज़ा के आने देते हैं तो वह देश भी आपके नागरिक को यह सुविधा देता है। इसके अतिरिक्त किसी देश की अर्थ व्यवस्था, वहां की आंतरिक स्थितियां भी उस देश के पासपोर्ट के वज़न को कम या ज़्यादा करती हैं।**

किसी देश के पासपोर्ट की ताकत कई बातों से निर्धारित होती है। इनमें सबसे ख़ास है उस देश के अन्य देशों के साथ द्विपक्षीय संबंध। आप किसी देश के नागरिक को अपने देश में बग़ैर वीज़ा के आने देते हैं तो वह देश भी आपके नागरिक को यह सुविधा देता है। इसके अतिरिक्त किसी देश की अर्थ व्यवस्था, वहां की आंतरिक स्थितियां भी उस देश के पासपोर्ट के वज़न को कम या ज़्यादा करती हैं। यहीं यह भी जान लें कि हेनली एंड पार्टनर्स के अलावा भी कुछ एजेंसियां हैं जो पासपोर्ट्स की रैंकिंग करती हैं, जैसे ग्लोबल पासपोर्ट इंडेक्स और नॉमेडकैपिटलिस्ट पासपोर्ट इंडेक्स। इनमें से हरेक के आकलन की विधियां एक दूसरे से थोड़ी–थोड़ी भिन्न हैं इसलिए इनकी रैंकिंग भी अलग–अलग होती है। उदाहरण के लिए भारतीय पासपोर्ट हेनली के यहां 77वें स्थान पर है तो ग्लोबल में 73वें और नॉमेड में 148वें स्थान पर है। नॉमेड की रैंकिंग में इतने फर्क़ की बड़ी वजह यह है कि वे लोग सम्बद्ध देश की कर व्यवस्था, उसके प्रति वैश्विक धारणा, दोहरी नागरिकता और वैयक्तिक स्वाधीनता को भी मद्दे नज़र रखते हैं। इनमें से सर्वाधिक लोकप्रिय हेनली रैंकिंग ही है।

किसी देश के पासपोर्ट की रैंकिंग से यह भी ज्ञात होता है कि उस देश की राजनयिक सेहत कैसी है! राजनय के क्षेत्र में उस देश का प्रभाव कितना है। वहां के नागरिक को अगर कम देश अपने यहां बग़ैर वीज़ा के आने दे रहे हैं तो इसका एक अर्थ यह भी है कि वह देश बहुत सारे देशों के साथ वीज़ा में छूट का अनुबंध कर पाने में असफल रहा है। सिंगापुर, जापान, संयुक्त अरब अमीरात जैसे देशों ने बहुत सारे देशों के साथ वीज़ा छूट अनुबंध करके ही अपने पासपोर्ट्स को ताकतवर बनाया है। जहां तक भारत का सवाल है, क्योंकि हमने अधिकांश देशों के पासपोर्ट धारकों के लिए वीज़ा अनिवार्य कर रखा है, हमारे नागरिक भी उन देशों में बग़ैर वीज़ा के नहीं जा पाते हैं। इसका असर केवल पर्यटकों पर ही नहीं पड़ता है, अपितु अंतरराष्ट्रीय शिक्षा, रोज़गार और निवेश के मामले में भी हम पिछड़ते हैं और वैश्विक स्तर की प्रतिस्पर्धा में भी नुकसान की स्थिति में रह जाते हैं।

खुशी की बात यह है कि भारत स्वयं भी इस दिशा में सचेष्ट है। काफी दिनों से हम यह पढ़ रहे हैं कि भारत भी आरएफआईडीचिप और बायोमीट्रिक डैटा वाले ई पासपोर्ट ज़ारी करना शुरु करने वाला है। इन ई पासपोर्ट्स के राष्ट्रव्यापी चलन के बाद भारत के पासपोर्ट की वैश्विक रैंकिग बेहतर होगी, यह उम्मीद की जा सकती है। इसके अलावा भी भारत सरकार विभिन्न देशों से वीज़ा मुक्ति के लिए और द्विपक्षीय रिश्तों की बेहतरी के लिए संवादरत है। इसके सुपरिणाम भी जल्दी ही आने लगेंगे। यह उम्मीद करना अनुचित नहीं होगा कि निकट भविष्य में सिंगापुर, जापान और दक्षिण कोरिया जैसे एशियाई देशों की तरह भारत भी अन्य देशों से मज़बूत राजनयिक संबंध कायम कर अपने पासपोर्ट को मज़बूत बना सकेगा।

**–अतिथि संपादक,**
**डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल**
**( शिक्षाविद और साहित्यकार )**

# सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर्स : समाज के लिए एक गंभीर चुनौती

सुनील दत्त गोयल

भारतीय समाज आज एक गंभीर संकट के मुँह में खड़ा है। सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर्स की बेलगाम फौज ने हमारी सामाजिक व्यवस्था को तहस–नहस कर दिया है। यह केवल मनोरंजन या व्यापारिक गतिविधि नहीं है–यह राष्ट्रीय चरित्र पर सीधा हमला है। सरकार की निष्क्रियता और सोशल मीडिया कंपनियों की मनमानी ने इस समस्या को महामारी का रूप दे दिया है। ये तथाकथित इन्फ्लुएंसर बिना किसी सत्यापन के भ्रामक जानकारी फैलाते हैं, जिससे लाखों लोग गुमराह होते हैं। स्वास्थ्य से लेकर राजनीति तक, हर क्षेत्र में असत्य को सत्य के रूप में परोसा जा रहा है।

इन इन्फ्लुएंसर्स की सामठी में गहरा पूर्वाग्रह और पक्षपात दिखता है। ये अपने व्यक्तिगत या प्रायोजित एजेंडे के अनुसार तथ्यों को तोड़–मरोड़कर प्रस्तुत करते हैं। धर्म, जाति, राजनीति और सामाजिक मुद्दों पर एकतरफा और भड़काऊ विचार परोसे जाते हैं, जिससे समाज में विभाजन और अशांति फैलती है। सबसे घातक पहलू यह है कि ये इन्फ्लुएंसर्स पेड मार्केटिंग को सामान्य सामग्री के रूप में छुपाते हैं। दर्शकों को पता ही नहीं चलता कि वे एक विज्ञापन देख रहे हैं या वास्तविक सलाह सुन रहे हैं। यह उपभोक्ता धोखाधड़ी का सबसे कुटिल रूप है, जहाँ भरोसे का फायदा उठाकर गलत उत्पादों और सेवाओं को बेचा जाता है। आज का नौजवान सोशल मीडिया पर अपना भविष्य बर्बाद कर रहे हैं। वे इस गलतफहमी में हैं कि उनके लाइक्स, शेयर और सब्सक्राइबर्स बढ़ जाएंगे, और इसी उम्मीद में वे किसी भी तरह की रील्स बना रहे हैं – चाहे उसमें जोखिम हो या अशोभनीय सामग्री।

पिछले कुछ वर्षों में हमने देखा है कि हजारों युवा केवल एक वायरल रील बनाने के चक्कर में अपनी जान तक गंवा चुके हैं। जब वे अपने लक्ष्यों को हासिल नहीं कर पाते, तब उनके सपनों की दुनिया बिखर जाती है और वे एंग्जायटी और डिप्रेशन का शिकार हो जाते हैं। इसका असर सिर्फ उनके जीवन पर नहीं, बल्कि उनके पूरे परिवार पर भी पड़ता है, और उनके लिए एक नई समस्या खड़ी हो जाती है। यह लोग यह नहीं समझ पा रहे हैं कि सोशल मीडिया का रेलीवेंस कुछ समय का ही है और यह कोई परमानेंट काम नहीं है लेकिन ज्यादा व्यूज लाइक्स और फॉलोअर्स बढ़ाने के लिए यह लोग कुछ भी करने को तैयार हैं। यह केवल व्यापारिक गतिविधि नहीं है। जब हमारे युवा इन फर्जी आदर्शों को देखकर अपने जीवन की दिशा तय करते हैं, तो यह पूरी पीढ़ी के साथ विश्वासघात है। इन इन्फ्लुएंसर्स ने हमारी संस्कृति में शॉर्टकट और छलकपट की मानसिकता घुसा दी है।

कितना दुखद है कि जिस देश में ;सत्यमेव जयते; का सिद्धांत है, वहाँ झूठ को व्यापार बनाया जा रहा है। हमारे पूर्वजों ने सिखाया था–;भले खुद का नुकसान हो जाए, पर किसी दूसरे का एक रुपया भी न डूबे।; आज यही लोग दूसरों को ठगने में गर्व महसूस करते हैं। फर्जी प्रोफाइल्स के माध्यम से धोखाधड़ी, फ्रॉड और सामाजिक अपराध का जो जाल बिछाया गया है, वह आर्थिक आतंकवाद से कम नहीं है। रोमांस स्कैम से लेकर निवेश फ्रॉड तक, हज़ारों करोड़ रुपए की चोरी हो रही है।

निवेश घोटाले: सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर्स की भूमिका

आज के दौर में सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर्स न केवल उत्पादों और ब्रांड्स का प्रचार करते हैं, बल्कि बड़े पैमाने पर शेयर बाज़ार और क्रिप्टो निवेश घोटालों को भी बढ़ावा देने में गहरा संलिप्त हो गए हैं। ये इन्फ्लुएंसर–अक्सर बड़ी फैन फॉलोइंग और 'विशेषज्ञ' की छवि लेकर–लोगों को बिना किसी वैधता या सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त सलाह के स्टॉक्स, म्यूचुअल फंड्स, या क्रिप्टोकरेंसी में निवेश करने के लिए उकसाते हैं।

उन्होंने नकली चार्ट, मनगढ़ंत 'गैरेंटीड रिटर्न' के दावे, और गुप्त टिप्स के नाम पर जनता को भ्रमित किया–परिणामस्वरूप लाखों लोग अपने जीवनभर की बचत ऐसे घोटालों में गंवा देते हैं। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स के जरिए वायरल होती इन फर्जी सलाहों और दिखावटी जीवनशैली के चलते कई निवेशक फेक ऐप्स और पोंजी योजनाओं के शिकार हुए हैं। क्रिप्टोकरेंसी जैसे अनियमित क्षेत्र में तो यह प्रवृत्ति और भी खतरनाक बन चुकी है, जहां कई इन्फ्लुएंसर्स, कंपनियों से मोटी रकम लेकर, स्कैम कॉइन्स का जबरदस्त प्रचार करते हैं और जरा–सी गिरावट होते ही लोगों की पूँजी डूब जाती है। इन गतिविधियों से न केवल आम निवेशक ठगे जाते हैं, बल्कि वित्तीय स्थिरता और बाजार की पारदर्शिता को भी जबरदस्त नुकसान पहुँचता है। यह स्थिति साफ़ दर्शाती है कि बिना किसी नियमन और कानूनी जवाबदेही के सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर्स निवेश जगत के सबसे बड़े जोखिम बन कर उभरे हैं, जिन पर तत्काल और कठोर नियंत्रण की आवश्यकता है।

तुलना: प्रिंट मीडिया बनाम सोशल मीडिया

प्रिंट मीडिया की सबसे बड़ी ताकत इसकी कड़ी सत्यापन प्रक्रिया में निहित है। यहाँ प्रत्येक खबर की गहराई से जाँच–पड़ताल होती है, तथ्यों को कई स्तरों पर परखा जाता है, और अनुभवी पत्रकारों द्वारा खोजी पत्रकारिता की जाती है। इसके विपरीत, सोशल मीडिया में किसी भी प्रकार का सत्यापन नहीं होता–कोई भी व्यक्ति कुछ भी लिखकर लाखों लोगों तक पहुँचा सकता है।

प्रिंट मीडिया में संपादकीय जवाबदेही की पूर्ण व्यवस्था है। संपादक और प्रकाशक प्रकाशित की गई हर सामग्री के लिए व्यक्तिगत रूप से जिम्मेदार होते हैं। यदि कोई गलत जानकारी छपती है, तो इसकी पूरी जिम्मेदारी संबंधित व्यक्तियों की होती है। सोशल मीडिया में यह जवाबदेही पूर्णत: अनुपस्थित है–न तो प्लेटफॉर्म की कोई जिम्मेदारी है और न ही व्यक्तिगत अकाउंट होल्डर की।

कानूनी ढांचे में स्पष्ट अंतर

प्रिंट मीडिया प्रेस काउंसिल ऑफ इंडिया और न्यायपालिका के कड़े नियंत्रण में काम करता है। गलत जानकारी के लिए कानूनी कार्रवाई, जुर्माना और लाइसेंस रद्द करने तक के प्रावधान हैं। इसके विपरीत, सोशल मीडिया एक कानूनी शून्यता में काम कर रहा है–न तो स्पष्ट नियम हैं और न ही प्रभावी कार्रवाई का तंत्र।

गुणवत्ता और उद्देश्य का मौलिक भेद

प्रिंट मीडिया में गुणवत्ता नियंत्रण का कड़ा तंत्र है। दशकों के अनुभव वाले पत्रकार, संपादक, और विशेषज्ञ मिलकर सामग्री तैयार करते हैं। इसका मुख्य उद्देश्य सूचना देना और जनहित में काम करना है। सोशल मीडिया का एकमात्र फोकस सनसनी पैदा करना और वायरलिटी हासिल करना है–यहाँ गुणवत्ता की जगह क्लिक्स और व्यूस की गिनती महत्वपूर्ण है।

राष्ट्रीय योगदान में आकाश–पाताल का अंतर

प्रिंट मीडिया का राष्ट्रीय योगदान अमूल्य है। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान इसने जनचेतना जगाई, आजादी के बाद लोकतांत्रिक मूल्यों को मजबूत बनाया, और राष्ट्र निर्माण में अहम भूमिका निभाई।

गांधी जी से लेकर आज तक के हर महत्वपूर्ण आंदोलन में प्रिंट मीडिया की भूमिका रही है। इसके ठीक उलट, सोशल मीडिया का योगदान समाज में विभाजन और अराजकता फैलाने में है। यह धर्म, जाति, राजनीति के नाम पर लोगों को बांटता है, फर्जी खबरें फैलाता है, और सामाजिक सामंजस्य को नुकसान पहुंचाता है।

प्रिंट मीडिया ने देश की आज़ादी से लेकर आज तक राष्ट्र निर्माण में अपना खून–पसीना लगाया है। इसका लंबा–चौड़ा इन्फ्रास्ट्रक्चर है, अनुभवी पत्रकारों की टीम है, और सबसे महत्वपूर्ण–नैतिक मानदंड हैं।

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स का मुख्य उद्देश्य लोगों को सम्मोहित/भ्रमित करना है, सूचना या जानकारी देना नहीं। ये कंपनियाँ विज्ञापन राजस्व कमाने के लिए सनसनीखेज़ और भड़काऊ सामग्री को बढ़ावा देती हैं। यहाँ अपरिपक्वता और फूहड़ता का बोलबाला है, जबकि तथ्यपरक जानकारी गायब है।

इन्फ्लुएंसर्स: आधुनिक युग के सामाजिक परजीवी

आज के अधिकांश इन्फ्लुएंसर्स सामाजिक परजीवी बनकर रह गए हैं। ये किराए के टट्टू हैं जो पैसे के लिए अपनी आत्मा तक बेच देते हैं। इनका कोई सिद्धांत नहीं, कोई नैतिकता नहीं, केवल लालच है। ये वही लोग हैं जो कल किसी कंपनी का प्रचार करते हैं, आज किसी राजनीतिक पार्टी का, और कल किसी विदेशी एजेंडे का। इनके कारण हमारी युवा पीढ़ी भटक रही है। लड़के–लड़कियाँ असंभव सपने देखते हैं, रातों–रात अमीर बनने के सपने देखते हैं। मेहनत, ईमानदारी और संयम की जगह शॉर्टकट और छलकपट की मानसिकता पनप रही है।

समाधान: तत्काल आवश्यक कार्रवाई

नकली पहचान का जहरीला खेल

आज हज़ारों फर्जी प्रोफाइल्स के माध्यम से धोखाधड़ी, फ्रॉड और सामाजिक अपराध का जाल बिछाया जा रहा है। एक व्यक्ति दर्जनों नकली अकाउंट बनाकर भोली–भाली जनता को ठगने में लगा है। रोमांस स्कैम से लेकर निवेश फ्रॉड तक, फेक प्रोफाइल्स के सहारे अरबों रुपए की चोरी हो रही है। यह आर्थिक आतंकवाद से कम नहीं है। इन फर्जी खातों का उपयोग धर्मांतरण, सामुदायिक दंगे, राष्ट्रविरोधी प्रचार और युवाओं के मानसिक भ्रष्टाचार के लिए किया जा रहा है। सरकार कब तक इस अराजकता को बर्दाश्त करती रहेगी?

यह सरकारी नीति की घोर विफलता है कि आज तक इस मुद्दे पर कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई है। जब आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग के ज़रिए हर फर्जी प्रोफाइल को पकड़ना संभव है, तो सरकार की मौनता समझ से परे है।

आधार–आधारित : एकमात्र समाधान

तत्काल प्रभाव से सभी सोशल मीडिया कंपनियों को आधार कार्ड प्रमाणीकरण के साथ अनिवार्य लागू करना होगा। यह कोई सुझाव नहीं, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा की आपातकालीन आवश्यकता है। जिस प्रकार बैंक खाता खोलने या मोबाइल कनेक्शन लेने के लिए आधार अनिवार्य है, उसी प्रकार सोशल मीडिया अकाउंट के लिए भी यह अनिवार्य होना चाहिए।

1. तत्काल लागू करने योग्य नीति

एक आधार, एक प्रोफाइल: प्रत्येक आधार कार्ड से केवल एक ही सोशल मीडिया अकाउंट की अनुमति

–आधारित सत्यापन: प्रत्येक पोस्ट के लिए आधार–लिंक्ड मोबाइल पर

तुरंत निलंबन: फर्जी जानकारी पाए जाने पर 24 घंटे के भीतर अकाउंट बंद करना

आपराधिक दायित्व: फेक प्रोफाइल बनाने वालों के खिलाफ तत्काल

2. सोशल मीडिया कंपनियों पर कड़े नियम

भारत में डेटा सेंटर: सभी कंपनियों के लिए अनिवार्य

भारतीय साझेदार: विदेशी कंपनियों के लिए स्थानीय पार्टनर की अनिवार्यता

भारी जुर्माना: नियम उल्लंघन पर 100 करोड़ तक का दंड

तुरंत बैन: भारतीय कानून न मानने पर सेवा बंद करना

3. इन्फ्लुएंसर उत्तरदायित्व अधिनियम

पेड कंटेंट की अनिवार्य घोषणा: हर प्रायोजित पोस्ट पर स्पष्ट लेबलिंग

तथ्य सत्यापन दायित्व: झूठी जानकारी फैलाने पर कानूनी कार्रवाई

लाइसेंसिंग प्रणाली: 1 लाख से ज्यादा फॉलोअर्स वाले इन्फ्लुएंसर्स के लिए लाइसेंस

4. डिजिटल साक्षरता अभियान

स्कूली पाठ्यक्रम में शामिल करना: फेक न्यूज़ पहचानने की ट्रेनिंग

अभिभावक जागरूकता: बच्चों के सोशल मीडिया उपयोग पर नियंत्रण

सामुदायिक कार्यक्रम: गाँव–शहर में डिजिटल जागरूकता अभियान

5. प्रिंट मीडिया को मज़बूती

सरकारी सहायता: विश्वसनीय पत्रकारिता के लिए विशेष फंड

डिजिटल अपग्रेड: प्रिंट मीडिया के लिए तकनीकी सहायता

युवा पत्रकारों को प्रोत्साहन: नैतिक पत्रकारिता के लिए छात्रवृत्ति

6. तकनीकी समाधान –आधारित निगरानी

ब्लॉकचेन सत्यापन: सामग्री की प्रामाणिकता के लिए

रियल–टाइम फैक्ट चेकिंग: त्वरित सत्यापन प्रणाली

यह राष्ट्रीय आपातकाल है। यदि अभी भी कार्रवाई नहीं हुई, तो आने वाली पीढ़ियाँ हमें कभी माफ नहीं करेंगी। आधार–आधारित तुरंत लागू करना, फर्जी प्रोफाइल्स को जड़ से मिटाना, और सोशल मीडिया को भारतीय मूल्यों के अनुकूल बनाना समय की मांग है। प्रिंट मीडिया की विश्वसनीयता को और मज़बूत बनाना होगा और डिजिटल अराजकता पर लगाम लगानी होगी। जिस सभ्यता और संस्कृति की रक्षा के लिए हमारे पूर्वजों ने बलिदान दिए, उसे इन फर्जी प्रोफाइल्स की भेंट नहीं चढ़ने दिया जा सकता। सोशल मीडिया का उपयोग समाज और देश के कल्याण के लिए, राष्ट्र निर्माण के लिए किया जाना चाहिए, न कि व्यक्तिगत लाभ और सामाजिक विघटन के लिए। समय रहते सचेत हो जाइए–देर हो जाने पर पछताना पड़ेगा।

**धन्यवाद,**
**रोटेरियन सुनील दत्त गोयल,**
**महानिदेशक, इम्पीरियल चैंबर ऑफ़ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री**

# 'जर्जर भवनों की रिपोर्ट तैयार कर आवश्यक कार्यवाही करें'

**■ जिला प्रभारी सचिव ने पावटा उपखंड में विद्यालय और आंगनबाड़ी भवनों का निरीक्षण किया**

**पावटा, (निसं)।** प्रबंध निदेशक, राजस्थान राज्य बुनकर संघ लिमिटेड जयपुर एवं जिला प्रभारी सचिव महावीर प्रसाद मीणा ने रविवार को उपखंड पावटा के राजकीय विद्यालयों और आंगनबाड़ी केंद्रों का निरीक्षण कर संबंधित अधिकारियों को भवन की स्थिति एवं अन्य सुविधाओं के संबंध में आवश्यक दिशा–निर्देश दिए। इस दौरान जिला कलेक्टर प्रियंका गोस्वामी, एसडीएम पावटा कपिल उपाध्याय, एसडीएम कोटपुतली बृजेश चौधरी सहित संबंधित अधिकारी मौजूद रहे।

प्रभारी सचिव मीणा ने राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, पाथरेड़ी एवं प्रागपुरा तथा आंगनबाड़ी के निरीक्षण के दौरान भवन की स्थिति, कक्षाओं की दशा, दीवारों की दरारें तथा परिसर की साफ–सफाई आदि का निरीक्षण किया। उन्होंने स्पष्ट कहा कि ऐसे भवन जो जर्जर अवस्था में है, उनका तुरंत चिन्हीकरण करें। उन्होंने संस्थानों में सुविधाओं की उपलब्धता, स्वच्छता, शौचालय, पेयजल और अन्य सुविधाओं को लेकर परिस्थिति का जायजा लिया। उन्होंने जिले के सभी उपखंड अधिकारी एवं संबंधित विभागीय अधिकारियों को निर्देशित किया कि अपने–अपने क्षेत्रों में स्थित राजकीय भवनों, विद्यालयों, आंगनबाड़ियों और भवनों का फील्ड निरीक्षण कर उनकी वास्तविक स्थिति का अवलोकन कर जो भवन जर्जर अवस्था में हैं अथवा उपयोग के लिए असुरक्षित हैं या मरम्मत की आवश्यकता है उनका चिन्हीकरण कर रिपोर्ट तैयार करें।

**जिला प्रभारी सचिव महावीर प्रसाद मीणा, कलेक्टर प्रियंका गोस्वामी, एसडीएम पावटा कपिल उपाध्याय ने पावटा में विद्यालयों और आंगनबाड़ी केंद्रों का निरीक्षण किया।**

प्रभारी सचिव ने स्पष्ट निर्देश दिए कि इस कार्य में किसी प्रकार की ढिलाई अथवा लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। उन्होंने कहा कि विद्यालय भवन केवल शिक्षा का केंद्र ही नहीं बल्कि बच्चों की सुरक्षा और समग्र विकास का आधार भी हैं। अत: बच्चों को एक सुरक्षित, स्वच्छ और अनुकूल वातावरण उपलब्ध कराना जिला प्रशासन की शीर्ष प्राथमिकता है।

जिला कलेक्टर प्रियंका गोस्वामी ने कहा कि जिला प्रशासन आमजन के हितों के प्रति पूरी तरह प्रतिबद्ध है और बच्चों की सुरक्षा को लेकर किसी भी स्तर पर लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। इस कार्य में सभी संबंधित अधिकारी जवाबदेही और तत्परता के साथ कार्य करें। जिला कलेक्टर के निर्देश पर जिले के उपखंड अधिकारी व जिला स्तरीय अधिकारी निरंतर फिल्ड़ में जाकर विद्यालयों, छात्रावासों व जर्जर भवनों का निरीक्षण कर रहे हैं।

## राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

### सोमवार 28 जुलाई, 2025

सावन मास, शुक्ल पक्ष, चतुरथी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2082, पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र सायं 5:36 तक, परिघ योग रात्रि 2:54 तक, वणिज करण दिन 11:03 तक, चन्द्रमा आज रात्रि 21:00 से कन्या राशि में संचार करेगा।

**ग्रह स्थिति:** सूर्य–कर्क चन्द्रमा–सिंह, मंगल–सिंह, बुध–कर्क, गुरू–मिथुन, शुक्र–मिथुन, शनि–मीन, राहु–कुम्भ, केतु–सिंह राशि में।

आज रवियोग सायं 5:36 तक है। भद्रा दिन 11:03 से रात्रि 11:25 तक रहेगी। आज सावन तृतीय वन सोमवार व्रत और वन महोत्सव दिवस है। आज वरद विनायक चतुर्थी, दूर्वा गणपति व्रत है। आज से श्रवण तपस्या (जैन) आरम्भ है। मंगल कन्या राशि में सायं 7:59 से प्रवेश करेगा।

**श्रेष्ठ चौघड़िया:** अमृत सूर्योदय से 7:33 तक, शुभ 9:13 से 10:53 तक, चर 2:13 से 3:53 तक, लाभ–अमृत 3:53 से सूर्यास्त तक।

**राहूकाल:** 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 5:53, सूर्यास्त 7:13

**मेष**
परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त हो सकते हैं। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। विवादित मामलों से राहत मिलेगी।

**वृष**
घर–परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

**मिथुन**
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।

**कर्क**
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है।

**सिंह**
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

**कन्या**
आर्थिक मामलों परेशानी हो सकती है। धन हानि का भय है। अनावश्यक धन खर्च होगा। मन में असंतोष बना रहेगा। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी।

**तुला**
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है।

**वृश्चिक**
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। नवीन कार्यों उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

**धनु**
परिवार में धार्मिक–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

**मकर**
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में परेशानी हो सकती है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

**कुंभ**
घर–परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।

**मीन**
स्वास्थ्य से संबंधित चिन्ता दूर होगी। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त–व्यस्त दिनचर्या एवं आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी।